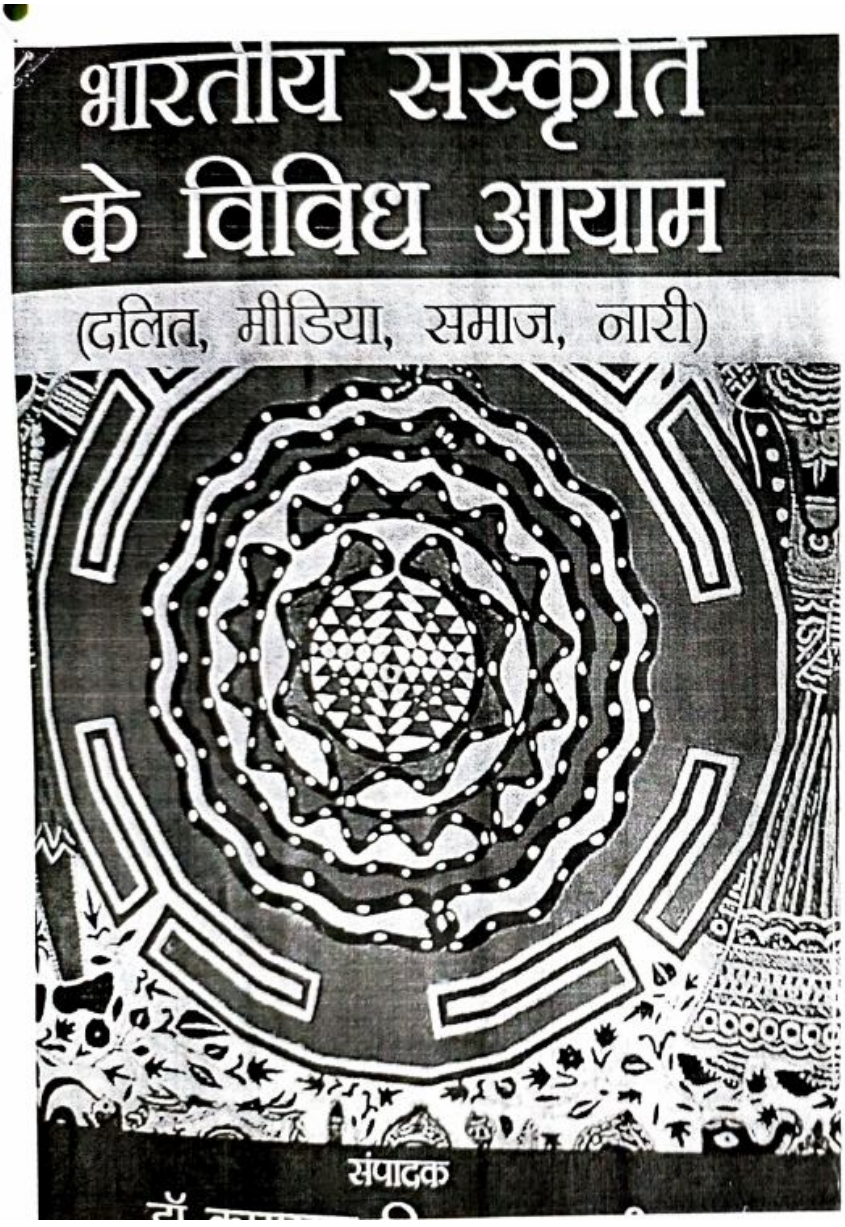

संजय प्रकाशन
4378/4 डी-209, जे.एम.डी. हाऊस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23245808, 41564415
मो. : 9313438740
E-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

© संपादक

ISBN 978-81-954008-5-0

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 995.00

शब्द संयोजन :
हर्ष कंप्यूटर्स
दिल्ली-110086

मुद्रक :
रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स
दिल्ली-110053

Bhartiya Sanskriti ke Vividh Aayam *by*
Dr. Kamraj Sindhu (Guruji)

8. नारी सशक्तिकरण में मीडिया की भूमिका
सुमन देवी 74

9. सुशीला टाकभौरे कृत 'तुम्हें बदलना ही होगा' में दलित चेतना
किल्पा ऐ.के. 82

10. भारतीय संस्कृति एवं साहित्य
डॉ. शालिनी माहेश्वरी 99

11. भारत में नारी सशक्तिकरण एवं मीडिया : एक अवलोकन 107
सुश्री संगीता बारला

12. दलित साहित्य की सामाजिक संरचना एवं अवधारणाएँ 115
डॉ. हेमलता तंवर

13. मीडिया के विविध आयाम 129
डॉ. निधा चौधरी-डॉ. साधना डंडरिया

14. दलित अस्मिता का सवाल और ओमप्रकाश वाल्मीकि 136
डॉ. बाबूलाल धनंदे

15. 'मनु का पाप' काव्य-संग्रह में दलितों की मानसिक वेदना का उद्घाटन 144
डॉ. बिजेंद्र कुमार

16. संस्कृति के उत्थान में साहित्य का योगदान 158
डॉ. सुमन देवी

17. भारतीय संस्कृति में विज्ञान 167
डॉ. रंजीता वैट

18. सिनेमा और दलित स्त्री 180
मुकेश कुमार मिगंटा

19. तुलसी के काव्य में सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य 189
नीमा कुमारी

'मनु का पाप' काव्य-संग्रह में दलितों की मानसिक वेदना का उद्घाटन

डॉ. बिजेंद्र कुमार

शोध आलेख सार

मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर युग की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। समाज ही उसको सुरक्षा प्रदान करता है। आपसी भाईचारा, प्यार-प्रेम, सहयोग, एकता, समानता, दया, क्षमा, त्याग आदि मानवीय मूल्य ही समाज को श्रेष्ठ बनाते हैं। जहाँ सभी को परम तत्व की संतान मानकर, श्रद्धा एवं पूजनीयता का भाव रखा जाता था। जहाँ मानवता की भावना सर्वोपरि रही है। यही हमारा भारतवर्ष था। हमारी संस्कृति और संस्कार हमें उदार हृदय बनाते थे। आज संपूर्ण विश्व जहाँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, खगोल शास्त्र आदि में नए-नए आविष्कार कर रहा है, उसने चाँद पर अपनी दुनिया बसाने की तैयारी कर ली। हम वहीं आज भी जातिवाद, छुआछूत, ऊँच-नीच, भ्रूण हत्या, सम्मान के लिए हत्या, दहेज प्रथा, पाखंड, अंधविश्वास आदि में फंसकर, अपने लिए गड्ढा खोद रहे हैं। दुनिया विकास की ओर अग्रसर हैं और हम अवन्नति के मार्ग पर चल रहे हैं। हमारे समाज में यह जातिवाद, अछूत आदि का जहर निरंतर चल रहा है। शिक्षित होने के बावजूद भी हम इस जाति के बंधन से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं और अपने ही भाइयों को दलित, शूद्र, अश्पृश्य एवं अछूत मानकर उन पर अत्याचार करते हैं, उनका शोषण करते हैं, उन्हें समाज में नीच कहकर प्रताड़ित करते हैं। हम भूल जाते हैं कि वह भी हमारे जैसे ही मानव हैं और उनका भी मन है। हमारे दुर्व्यवहार से वो सब किस मानसिक वेदना से होकर गुजरते होंगे। उनका हृदय इस अपमान को सहकर कितना पीड़ित होता होगा। हम भगवान को तो पूजते हैं, लेकिन ईश्वर की ही इस संतान का निरादर करते हैं, जोकि अनुचित है। आज